INTERNATIONAL EDUCATIONAL APPLIED RESEARCH JOURNAL (IEARJ)
Volume 04, Issue 09, Sep 2020
E-ISSN: 2456-6713

MAHATMA GANDHI IN THE FREEDOM MOVEMENT

स्वतंत्रता आन्दोंलन में महात्मा गाँधी

Dr. Kundan Kumar

M.A., Phd, (History), B. R. A. Bihar University, Muzaffarpur, Patna, Bihar, India

महात्मा गाँधी 1915 ई0 में भारत आएँ, जहाँ वे गोपाल कृश्ण गोखले से काफी प्रभावित हुए और उन्हें अपना राजनीतिक गुरू स्वीकार किया। लोकमान्य तिलक के उपरान्त जब देंश में राजनीतिक मान्यता पैदा हुई तो उन्होंने साबरमती में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना कर सत्याग्रह करने को तत्पर हुए।

भारतीया राजनीति में गाँधी का सक्रिय प्रादुर्भाव 1917–18 के काल में हुआ जो कि तीन स्थानीय समस्याओं से सम्बंन्धित था। सर्वप्रथम 1917 में गाँधीजी ने चम्पारण में 'तीन कठिया' व्यवस्था के विरूद्ध आन्दोलन कर किसानों को नील की खेती करने से मुक्ति दिलायी। 1918 ई0 में खेड़ा में 'कर नही दो' आन्दोलन चलाया और कर की दर को कम करवाने में सफलता प्राप्त की। 1918 में ही गाँधी ने अहमदाबाद के मिल मजदूरों के लिए आमरण अनशन किया, जो सफल रहा।

गाँधीजी गोखले से प्रभावित थे इसलिए उन्होंने भारतीय राजनीति में बिट्रिश सरकार के सहयोगी के रूप में प्रवेश किया। इन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के समय बिट्रिश सरकार का अभूतपूर्ण सहायता की, जिससे खुश होकर सरकार ने इन्हें 'कैसर–ए–हिन्द' सम्मान से सम्मनित किया। लेकिन 13 अप्रैल 1919 को पारित रॉलेट एक्ट, जालियावाला बाग हत्याकांड एवं खिलाफत आन्दोलन समस्याओं ने गाँधीजी को अंग्रेजों के विरूद्ध 1920 से असहयोग आन्दोलन चलाया जो जन आन्दोलन के रूप में प्रकट हुआ। 5 फरवरी, 1922 में चौरी–चौरा में हुए हिंसात्मक घटना के कारण गाँधीजी ने 22 फरवरी, 1922 को असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया। इस सन्दर्भ में सुभाशचन्द्र बोस ने लिखा है– *'To Sound The Obdes Of Setseat Just When Public Enthusiasm Was Seachng The Bailing Point Was Nothing Sost Of A National Calamity.''*

गाँधीजी के अनुसार– *'Non-Violence Is The Law Of Our Species as Violence Is the Law Of the bruite.''*

असहयोग आन्दोलन के पचात् महात्मा गाँधी ने साम्प्रदायिकता एवं अपृयता के अन्त हेतू रचनात्मक कार्य किये। उन्होंने दीन–हीन एवं परिजनों को गले लगाया और हिन्दू–मुस्लिम एकता हेतू अहवान किया। उन्होंने नारियों के उत्थान, गृह उधोग का प्रचार, चरखे चलाना एवं मधपान निशेध जैसे रचनात्मक कार्यक्रम आरंम्भ किए। अपने इस कार्यक्रम के लिए 'सर्वोदय समाज' की स्थापना की।

6 वर्ष के लम्बे अन्तराल के बाद गाँधीजी एक बार फिर वे राजनिति में सक्रिय भाग लेना भुारू किया। इस बीच वे 1924 में वेलगाँव अधिवेशन में कांग्रेस की अध्यक्षता की । 1929 ई0 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में गाँधीजी ने जवाहरलाल नेहरू को अध्यक्ष बनवया एंव एक प्रस्ताव पारित कर 'पूर्ण स्वराज' को अपना लक्ष्य घोशित किया।

सरकार द्वारा स्वराज्य की मांग ठुकराएँ जाने पर भारतीय राष्ट्रवादियों में उबाल आ गया, जिसकी परिणति मार्च, 1930 ई0 में 'नमक सत्याग्रह' अथवा सविनय अवज्ञा आंदोलन के रूप में हुई।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में आन्दोलन देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँच गया। 79 अनुयायियों के साथ 12 मार्च, 1930 को दाण्डी के लिए प्रस्थान किया। जहाँ समुद्रतट पर नमन बनाकर कानून तोड़ा। नमक तो प्रतीक था, लोगों को स्वतंत्रता के प्रति जागरूक करना था अंग्रेज नीतियों का विरोध करना था। नेताजी सुभाश चन्द्र घोस ने तो यहाँ तक लिखा है, *"It may be compared to Napolean's March on Paris on his return from Elbaand to Mussolini's March on Rome with a view of the reizure of Political Power."*

टाइम्स के सवांददाता ने 14 अप्रैल, 1930 को बम्बई से नमक सत्याग्रह के बारे तार दिया, ''न केवल देश कानून तोड़ा गया है, बल्कि भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक उसके प्रति घृणा फैल गई।''

गाँधी ने अनुयायियों के लिए निम्न कार्यक्रम तैयार कियेः–

1. बहने को शराब, अफीम तथा विदेशी कपड़ों की दूकानों पर घरना देना चाहिए।
2. भारत के प्रत्येंक ग्राम मे नमक बनाया जाए।
3. प्रत्येक परिवार में बूढ़े तथा युवक तकली चालकर कपड़ा बुनने के लिए सूत काटे।
4. प्रत्येंक परिवार के लोग विदेशी कपड़ों को जला दें।
5. हिन्दुओं को छूआछूत से ऊपर उठना चाहिए।
6. समस्त सरकारी कर्मचारियों को त्याग–पत्र दे देना चाहिए।
7. विद्याथिर्यो को सरकारी स्कूल एंव कॉलेज त्याग देना चाहिए।
8. सरकार को कोई कर नही देना चाहिए।

गाँधीजी ने 6 अप्रैल, 1930 को थोड़ा सा नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ा। यह 'नमक सत्याग्रह' तो बस प्रतीक था। देश भर में अहिसांत्मक तरीके से सरकारी कानून तोड़े जाने लगे। आंदोलन मे युवकों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। इस आंदोलन की एक विशेशता यह की कि इसमें 'मुस्लिम महिलाओं' की भागीदारी कम न थी।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रगति के संबंध में आचार्य नरेन्द्र देव ने लिखा है कि, ''इस युद्ध ने अहिंसा व आत्मा बलिदान का अपूर्व परिचय दिया। कम–से–कम 80 हजार लोग जेलों में गये और एक हजार लोग मारे गए इसमें स्त्रियों का भाग भी विशेश उल्लेखनीय रहा और बच्चों की वानर सेना तो प्रसिद्ध हो गई।

आन्दोलन की तेजत्तर होती गति से सरकार सकते में आ गई एवं उसने कठोर दमन का सहारा लिया। प्रायः आधे दर्जन काले अध्यादेश लागू किये गये, कांग्रेस को अवैध घोशित किया गया, सभी प्रमुख नेता गिरफ्तार कर लिए गए। बड़ी संख्या में नागरिक भी बन्दी बनाये गये। भाान्तिपूर्ण निहत्थे आंदोलनकारियों पर लाठिया एवं गोलिया बरसाई गई। पुलिसिया दमन के एक प्रत्यक्षदर्शी अमरीकी पत्रकार 'न्यू फ्रीमैन' के संवाददाता वेममिलर के भाब्दों में ''22 देशों में 18 वर्श से संवाददाता के रूप में मैने असंख्य, उपद्रव संघर्श गली–कूचे में जमकर हुई लड़ाईया और विद्रोह देखे है । मगर धरसना जैसे रोंगटे खेड़े कर देने वाले मर्मभेदी दृ" य मैने कभी नही देखे। कभी–कभी तो ये इतने दुःखद हो जाते थे कि क्षण–भर के लिए आँख फेर लेनी पड़ती थी। स्वयं सेवकों का अनुशासन अद्भूद चीज थी। मालूम होता था कि इस लोगों ने गाँधीजी के अहिसा धर्म को घोलकर पी लिया है।''

सरकार तथा कांग्रेस दोनों की आंन्दोलन का अन्त चाहने लगे। मध्यस्थों के सहयोग से 5 मार्च, 1931 ई0 के दिन महात्मा गाँधी तथा लार्ड डर्विन के बीच समझौता हुआ, जो गाँधी–इर्विन समझौता कहलाया। इसके अनुसार सत्याग्रह वापस ले लिया जाएँगा, राजनीतिक कैदी मुक्त कर दिए जाएँगे और कांग्रेस गोलमेज सम्मेलन में भाग लेगी। के0 एम0 मुन्शी ने लिखा है, ''यह भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है।''

राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गाँधी का योगदान यही समाप्त नही होता है नवम्बर 1931 ई0 में लंदन में हुए द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस का नेतृत्व किया। गाँधी जी ने दलितों के पृथक निर्वाचन–प्रणाली के विरोध में 1932 में जेल में आमरण अनशन किया जो *''Poona Pact''* के बाद समाप्त हुआ व उपवास तोड़ा। 7 अप्रैल, 1932 को गाँधी जी ने 'सविनय अवज्ञा आंदोलन को समाप्त कर दिया।
3 सितंबर, 1939 को शुरू हुए दूसरे विश्वयुद्ध में गाँधीजी ने सरकार के प्रति असहयोग की नीति अपनायी। गाँधीजी ने 17 अक्टूबर, 1940 को 'व्यक्तिगत् सत्याग्रह आंदोलन' भुरू किया। मई, 1942 ई0 में आए' क्रिप्स प्रस्ताव को *''Past dated chaque''* कहकर विरोध किया।

महात्मा गाँधी का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान लगातार जारी रहा। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक 27 अप्रैल, 1942 ई0 को इलाहाबाद में हुई। जहाँ पर महात्मा गाँधी ने कहा कि, ''भारत की समस्या का एक मात्र निदान अंग्रेजों द्वारा भारत छोड़ने में ही।''उनके अनुसार,–

1. बिट्रेन भारत की रक्षा करने में असमर्थ है, बिट्रेन सबकुछ अपने स्वार्थ में कर रहा है।
2. अंग्रेजों को भारत छोड़ देना चाहिए।
3. भारत की स्वतंत्रता के लिए विदेशी सहायता की आवश्यकता नही है।
4. भारत की किसी राज्य से दुश्मनी नही है।
5. भारत पर जापान द्वारा आक्रमण किये जाने पर अहिंसात्मक आंदोलन द्वारा उसका सामना किया जाएँगा।
6. भारत में विदेशी सैनिकों का रहना भारत के हित में नही है।

वर्धा प्रस्ताव :– 14 जुलाई, 1942 को कांग्रेस कार्य समीति की बैठक वर्धा में हुई, जिसमें एक प्रस्ताव द्वारा यह मांग की गई कि अंग्रेज भारत छोड़ कर चले जाँए। अगस्त 1942 को इलाहाबाद में तिलक दिवस के अवसर पर पंडित नेहरू ने कहा था ''हम एक ऐसा खेल खेलने जा रहे है, हम आग से खोलने जा रहे है, हम तलवार का प्रयोग करने जा रहे है, जिसकी चोट उल्टे हमारे उपर भी पड़ सकती है, लेकिन हम क्या करे? हम विवश है।'' इस समय राजेन्द्र बाबू ने कहा– ''हमको इस बार भी गोली खाने और तोप का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।''

भारत छोड़ो आन्दोलन :–

7 व 8 अगस्त, 1942 को कांग्रेस कार्य समिति की बैठक बंबई में हुई, जिसमें भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित कर दिया गया, लेकिन गाँधीजी ने वायसराय से समझौता करना चाहा। 9 अगस्त 1942 को दिन निकलने से पहले गाँधी सहित कांग्रेस के मुख्य नेताओं को हिरासत में ले लिया गया। बिट्रिश सरकार के इस कार्यवाही ने एक चिनगारी का कार्य किया। फलतः भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ हो गया। 'करो या मरो' का नारा संपूर्ण भारत में गूंज उठा। संपूर्ण देश में विद्रोह की अग्नि धधक उठी। डॉ ई वरी प्रसाद ने लिखा है ''1942 के विद्रोह में औपनिवेशिक स्वराज्य की सारी बातें जल गयी। भारत अब पूर्ण स्वतंत्रता से कम कुछ नहीं चाहता था। अंग्रेजों का भारत छोड़ना निश्चित हो गया।''

आंदोलन को कुचलने के लिए सरकार ने दमन चक्र पूरी भाक्ति वनृशंसता के साथ चलाया। सरकार बमबारी एंव हवाई जहाजों से गोलीबारी करने में नही चूकी। हजारों लोगों की मौते हुई, अनगिनत जेल भेजे गए। बलजीत सिंह ने पुलिस अत्याचार का वर्णन करते हुए लिखा है, ''तपती धूप में खड़ा कराकर गोली मार देना, उन्हें नंगा पेड़ से उल्टा टांग देना तब कोड़े से मारना, औरतों को नंगा कर मारना,.....''इस तरह के आतंक के कारण 9 मई, 1944 ई0 तक आंदोलन धीमी गति से चला और बाद में दब गया। लेकिन महात्मा गाँधी यही नही रूके, उन्होंने 1947 में आए 'माउन्टबेटन योजना'' को भारतीय स्वतंत्रता के लिए मजबूर कर दिया। इस तरह के आतंक के कारण 9 मई, 1944 ई0 तक आंदोलन धीमी गति से चला और बाद में दब गया। लेकिन इसका प्रभाव दूरगामी रहा। तभी तो डॉ ई" वरी प्रसाद ने लिखा है– ''अगस्त क्रांति अत्याचार और दमन के विरूद्ध भारतीय जनता का विद्रोह या, जिसकी तुलना फ्रांस के इतिहास में बेस्टिल के पतन अथवा सेवियत रूश के अक्टूबर क्रांति से की जा सकती है।'' वे यही नही रूके उन्होंने यहा तक कहा, ''1942 विद्रोह में औपनिवेशिक स्वराज्य की सारी बाते जल गई भारत अब पूर्ण स्वतंत्रता से कम कुछ भी नही चाहता था अंग्रेजों का भारत छोड़ना नि" चत हो गया''। मजबूर होकर अंग्रेजों ने भारत की स्वतंत्रता की घोशण कर दी। फलतः15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

सन्दर्भ सूची :–

I. महात्मा गाँधी– सत्य के प्रयोग, अहमदाबाद।
II. राजेन्द्र प्रसाद–इंडिया डिवाईडेट, नई दिल्ली।
III. गोपनीय दीक्षित– गाँधी की चुनौती, कम्यूनिजम को, अहमदाबाद।
IV. राम मनोहर लोहिया– समाजवादी आंदोलन का इतिहास, हैदराबाद।
V. महादेव देसाई–गाँधीजी के सत्याग्रह के झलक, सर्वोदय साहित्य, अहमदाबाद।
VI. तेन्दुलकर–भारत छोड़ों आंदोलन
VII. विपिन चन्द्रा– भारतीय पूँजीपति, और राश्ट्रीय
VIII. वी0एल0 ग्रोबर– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम

IX. उमा मुखर्जी– फाईट फॉर फ्रीडम एण्ड स्वदेशी जागरण, कलकता।
X. महात्मा गाँधी– हिन्द स्वराज्य, अहमदाबाद।